अमर उजाला

नई दिल्ली । बृहस्पतिवार, 13 जून 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

हमें नायकों की खोज में नहीं रहना चाहिए, बल्कि हमें अच्छे विचारों की खोज करते रहना चाहिए।

- नोम चोम्स्की

प्रसिद्ध लेखक

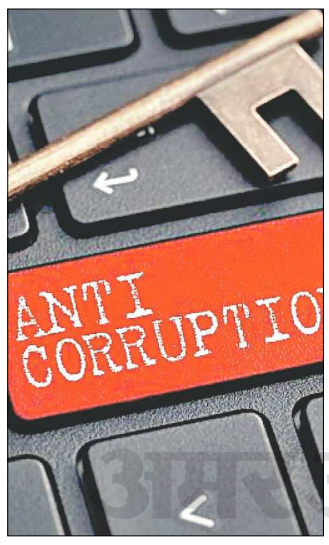

वित्त मंत्रालय के बारह दागदार अधिकारियों को जबरन रिटायर कर सरकार ने भ्रष्टाचार को बर्दाश्त न करने का सख्त संदेश दिया है, जिससे सरकारी कामकाज में ईमानदारी और पारदर्शिता को बढ़ावा मिलेगा।

सख्त संदेश

वित्त मंत्रालय ने बारह भ्रष्ट और दागदार छवि वाले आयकर अधिकारियों को फंडामेंटल रूल्स के नियम 56 (जे) के तहत जबरन रिटायर कर जो सख्त संदेश दिया है, वह प्रशंसनीय तो है ही, इससे सरकारी क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार को बर्दाश्त करते रहने की धारणा भी ध्वस्त हुई है। जिन अधिकारियों को बाहर का रास्ता दिखाया गया है, उनमें मुख्य आयुक्त, प्रमुख आयुक्त और आयुक्त जैसे वरिष्ठतम अधिकारी थे। उनके खिलाफ उगाही करने, रिश्वत लेने, आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने, अपने पद और अधिकारों का दुरुपयोग करने और यौन उत्पीड़न जैसे गंभीर आरोप थे। जबकि एक अधिकारी को अपनी अयोग्यता के कारण जाना पड़ा है। हालांकि इससे पहले 2017 में भी सरकार ने कुछ भ्रष्ट और निकम्मे अधिकारियों को जबरन रिटायर किया था, लेकिन भ्रष्टाचार और कदाचार में फंसे इतने सारे अधिकारियों के खिलाफ सामूहिक कार्रवाई का यह पहला ही मामला है। सरकारी क्षेत्र के बारे में, दुर्योग से, यह धारणा बन गई है कि खासकर रसूखदार पदों पर भ्रष्टाचार और अधिकारों के दुरुपयोग को रोक पाने की कोई प्रभावी व्यवस्था नहीं है। अभी तक भ्रष्ट सरकारी कर्मचारियों-अधिकारियों के खिलाफ ज्यादातर रूटीन विभागीय कार्रवाई होती थी और उनकी नौकरी कमोबेश बनी ही रहती थी। वर्षों तक मुकदमा चलते रहने के कारण सरकारी समय और धन की भी बर्बादी होती थी। इसी कारण सरकारी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार को खत्म करने का अभियान कभी तार्किक परिणति तक नहीं पहुंच पाया। बाहर निकाले गए इन बारह अधिकारियों में से एक को आय से अधिक संपत्ति के मामले में दस साल पहले निलंबित किया गया था, तो एक पर अपने ही विभाग की आयुक्त स्तर की दो महिला अधिकारियों के यौन उत्पीड़न का मामला चल रहा है! बारह में से आठ अधिकारियों के खिलाफ सीबीआई जांच चल रही थी, कुछ जेल तक जा चुके थे और जमानत पर बाहर आ जाते थे। जबरन रिटायर किए गए ये अधिकारी बची हुई नौकरी के वेतन और सुविधाओं के लाभ से तो वंचित होंगे ही, उससे भी बड़ी बात यह कि अपनी दागदार छवि से वे जिंदगी भर बाहर नहीं निकल पाएंगे। यह फैसला जहां भ्रष्टाचारियों को भयभीत करेगा, वहीं इस कदम से सरकारी कामकाज में ईमानदारी और पारदर्शिता को भी बढ़ावा मिलेगा। उम्मीद करनी चाहिए कि भ्रष्टाचार के खिलाफ सरकार का यह अभियान जारी रहेगा।

सच्चाई से दूर भागती कांग्रेस

ऐसा लगता है कि 2019 के आम चुनाव में कांग्रेस को मिली पराजय ने भाजपा को मिली जीत से कहीं अधिक प्रभाव डाला है। कांग्रेस निरंतर पतन की ओर है और राष्ट्रीय विपक्ष या फिर किसी ऐसी पार्टी का अभाव जिसके इर्द-गिर्द दूसरी गैर-एनडीए पार्टियां एकजुट हो सकें, ताकि मोदी की अगुआई में भाजपा के विजयी रथ पर नजर रखी जा सके, हमारे जैसे संसदीय लोकतंत्र के लिए संकट से कम नहीं।

इसीलिए कांग्रेस की आज जो हालत हो गई है, वह सिर्फ इस पार्टी के लिए ही नहीं, बल्कि उन 12 करोड़ लोगों के लिए भी दुख का कारण है, जिन्होंने मोदी लहर के बावजूद इस पार्टी को वोट दिया और ऐसे तमाम लोगों के लिए भी, जो जीवंत लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए कांग्रेस का पुनरुत्थान जरूरी मानते हैं। नतीजे आने के बाद कांग्रेस पांच साल बाद सिर्फ आठ सीटों का इजाफा कर 52 सीटें ही हासिल कर सकी। उसे 20 फीसदी से भी कम वोट मिले, जैसा कि कुछ वर्ष पहले तक भाजपा को हासिल होते थे। ऐसी हालत में देश की सबसे पुरानी पार्टी को गहरा धक्का लगा है।

पार्टी की हार की जिम्मेदारी लेते हुए अध्यक्ष राहुल गांधी ने इस्तीफा दे दिया, लेकिन पार्टी अभी तक उस पर कोई फैसला नहीं ले सकी है। कांग्रेस कार्यसमिति (सीडब्ल्यूसी) ने उनका इस्तीफा स्वीकार नहीं किया, लेकिन राहुल इस पर अड़े हुए हैं। तीन महीने बाद जब तीन राज्यों महाराष्ट्र, झारखंड और हरियाणा के चुनाव हैं और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह इन राज्यों के पार्टी नेताओं के साथ रणनीतिक बैठकें कर चुके हैं, वहीं कांग्रेस इसकी तैयारी में जुटने के बजाय असमंजस में है। नेतृत्व के सवाल को सुलझाने में हो रही देरी से पार्टी के भीतर असुरक्षा गहराती जा रही है, जिससे ऐसे लोग पार्टी छोड़कर जाने को प्रेरित हुए हैं, जिन्हें बाहर अधिक संभावनाएं नजर आ रही हैं। तेलंगाना में कांग्रेस के 18 में से 12 विधायक टीआरएस में शामिल हो चुके हैं; महाराष्ट्र में विपक्ष के नेता आर विखे पाटिल पाला बदलकर भाजपा में जा चुके हैं। राजस्थान और हरियाणा में पार्टी के भीतर इस कदर झगड़ा चल रहा है कि जब हरियाणा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष से राज्य में पार्टी की हार के बाबत पूछा गया तो उन्होंने कहा, 'मुझे गोली मार दो।'

यदि कांग्रेस राहुल को पद पर बने रहने को विवश करती है, तो इसे सिर्फ नौटंकी की तरह देखा जाएगा। इस संकट से उबरने में नाकाम रहने पर कांग्रेस के प्रति देश में निराशा का भाव ही बढ़ेगा।

नीरजा चौधरी, वरिष्ठ पत्रकार

कांग्रेस में हताशा और अव्यवस्था को देखते हुए पार्टी को जितनी जल्दी हो सके नेतृत्व के सवाल को सुलझाना चाहिए और पार्टी प्रमुख का पद छोड़ने के राहुल गांधी के निर्णय का सम्मान करना चाहिए। यदि वह राहुल को पद पर बने रहने को विवश करती है, तो इसे सिर्फ नौटंकी की तरह देखा जाएगा। इस संकट से उबरने में नाकाम रहने पर कांग्रेस के प्रति देश में निराशा का भाव ही बढ़ेगा, जोकि आज अस्तित्व के संकट से गुजर रही है। इससे राहुल गांधी की स्थिति भी दयनीय होगी। यदि वह इस्तीफे पर अड़े रहते हैं, तो उन्हें कुछ वर्ग का समर्थन मिल सकता है और वह आगे संघर्ष के लिए तैयार हो सकते हैं।

2019 के चुनाव में खासतौर से युवा मतदाताओं के बीच 'वंशवाद' एक मुद्दा था और नरेंद्र मोदी के 'नामदार बनाम कामदार' के उपहास ने बहुतों को प्रभावित किया और ऐसे में जवाबदेही के सिद्धांत पर अड़े रहकर राहुल जनादेश का ही सम्मान करेंगे। पार्टी के नए अध्यक्ष के अधीन राहुल महासचिव के रूप में काम कर सकते हैं और यह उनके पक्ष में ही जाएगा जिससे वह यह प्रदर्शित कर सकेंगे कि वह कामदार के रूप में काम कर सकते हैं। उन्होंने सीडब्ल्यूसी से यह भी आग्रह किया है कि उनकी जगह उनकी बहन प्रियंका वाड्रा को भी अध्यक्ष न बनाया जाए जो अंततः गांधी परिवार से ही हैं। प्रियंका को पहले ही उत्तर प्रदेश के 2022 में होने वाले विधानसभा चुनाव की जिम्मेदारी दी जा चुकी है।

ऐसी आशंकाएं भी व्यक्त की जा रही हैं कि नेहरू-गांधी परिवार के किसी सदस्य के नेतृत्व के बिना कांग्रेस बिखर सकती है यहां तक कि उसमें विभाजन भी हो सकता है। नेहरू-गांधी परिवार ने पार्टी को न केवल एकजुट रखा था, बल्कि वह वोट भी जुटाता रहा। यह एक और वजह है, जिसके कारण कांग्रेसजन खुद में से किसी और के बजाय उनके नेतृत्व पर भरोसा करते रहे। पार्टी के भीतर ऐसे कई नेता हैं, जिनमें अध्यक्ष का पद संभालने की क्षमता है और संभव है कि पार्टी दक्षिण भारत से किसी नाम पर विचार करे, क्योंकि उत्तर और पूर्व के बजाय दक्षिण भारत ने कांग्रेस का कहीं अधिक साथ दिया है। यदि नया अध्यक्ष सहमति की प्रक्रिया से चुना जाए और उसे नेहरू-गांधी परिवार का समर्थन भी हासिल हो, तो कोई कारण नहीं है कि कांग्रेस में विभाजन हो।

अभी पार्टी को प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार का तो चयन करना नहीं है। अभी जरूरत है एक-एक कर ऐसे राज्यों में कठिन परिश्रम करने की जहां चुनाव हैं, ताकि पार्टी को दोबारा खड़ा किया जा सके। गैर नेहरू-गांधी अध्यक्ष ऐसे लोगों की कांग्रेस में वापसी का सबब भी बन सकता है, जिन्होंने भिन्न समयों में पार्टी से नाता तोड़ लिया था। मसलन शरद पवार की एनसीपी, जिसे लेकर हाल ही में चर्चा चली, जब राहुल गांधी ने पवार के साथ दो घंटे की बैठक की थी। वहीं भारी जीत के बाद जगन रेड्डी एनडीए के करीब जाते दिख रहे हैं, क्योंकि उन्हें केंद्र से मदद की जरूरत होगी। अलबत्ता दबावों से गुजर रही ममता बनर्जी कांग्रेस के साथ किसी तरह की समझ बना सकती हैं, बशर्ते की पार्टी खुद को संभाल ले।

नए कांग्रेस अध्यक्ष को उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के चार कार्यकारी अध्यक्षों की नियुक्ति करने से कोई रोकेगा नहीं, लेकिन आज उसे जरूरत होगी रेस के घोड़ों की जो कड़ी मेहनत कर सकें और बेहतर प्रदर्शन दे सकें। भारत बदल रहा है, इसलिए कांग्रेस को भी बदलना चाहिए। भाजपा में हाई कमान संस्कृति चल सकती है, क्योंकि नरेंद्र मोदी और अमित शाह ने पार्टी को विजय दिलाई है और उन पर कोई उंगली नहीं उठा सकता। मगर कांग्रेस को फिर से खड़ा होना है, तो उसे भिन्न रणनीति अपनानी होगी और निर्णय लेने की प्रक्रिया का विकेंद्रीकरण करना होगा।

अंतर्ध्वनि

>> अज्ञेय

कृतिकार के लिए अनुभव से भी गहरी चीज अनुभूति है

मैं क्यों लिखता हूं? यह प्रश्न बड़ा सरल जान पड़ता है, पर बड़ा कठिन भी है, क्योंकि इसका उत्तर लेखक के आंतरिक जीवन के स्तरों से संबंध रखता है। उन सबको संक्षेप में, कुछ वाक्यों में बांध देना आसान तो नहीं ही है, न जाने संभव भी है या नहीं। मैं इसीलिए लिखता हूं कि मैं स्वयं जानना चाहता हूं कि मैं क्यों लिखता हूं। मैं विज्ञान का विद्यार्थी रहा हूं और मेरी नियमित शिक्षा उसी विषय में हुई है। अणु क्या होता है, हम रेडियम-धर्मी तत्त्वों का अध्ययन करते हुए कैसे विज्ञान की उस सीढ़ी तक पहुंचे, जहां अणु का भेदन संभव हुआ। रेडियम-धर्मिता के क्या प्रभाव होते हैं, इस सबका पुस्तकीय या सैद्धांतिक ज्ञान तो मुझे था। फिर जब हिरोशिमा में अणु-बम गिरा, तब उसके समाचार मैंने पढ़े और उसके परवर्ती प्रभावों का भी विवरण पढ़ता रहा। विज्ञान के इस दुरुपयोग के प्रति बुद्धि का विद्रोह स्वाभाविक था, मैंने लेख आदि में कुछ लिखा भी पर अनुभूति के स्तर पर जो विवशता होती है वह बौद्धिक पकड़ से आगे की बात है। इसलिए कविता मैंने इस विषय में नहीं लिखी। मुझे जापान जाने का अवसर मिला। तब हिरोशिमा भी गया था और वह अस्पताल भी देखा, जहां रेडियम-धर्मी तत्त्वों से आहत लोग वर्षों से कष्ट पा रहे थे। इस प्रकार अनुभव भी हुआ, पर अनुभव से अनुभूति गहरी चीज है, कम-से-कम कृतिकार के लिए। एक दिन वहीं सड़क पर घूमते हुए देखा कि एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया है। विस्फोट के समय वहां कोई खड़ा रहा होगा और विस्फोट से बिखरे रेडियम-धर्मी पदार्थ की किरणें उसमें रुद्ध हो गई होंगी, जो आसपास से आगे बढ़ गईं, उन्होंने पत्थर को झुलसा दिया, जो उस व्यक्ति पर अटकीं। उन्होंने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। और अचानक एक दिन मैंने हिरोशिमा पर कविता लिखी। जापान में नहीं, भारत लौटकर, रेलगाड़ी में बैठे-बैठे।

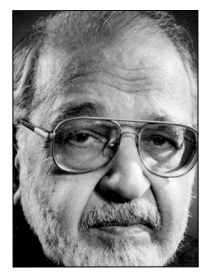

-प्रसिद्ध कवि, लेखक और संपादक।

मंजिलें और भी हैं

>> माही भजनी

भीख मांगने वाले बच्चे अब अंग्रेजी बोलते हैं

मैं भोपाल की रहने वाली हूं। बचपन में जब मैं स्कूल जाती थी, तो गरीब बच्चों को देखकर अक्सर अपनी मां से पूछती थी कि ये बच्चे मेरी तरह स्कूल क्यों नहीं जाते? बड़ी हुई तो इसकी वजह समझ में आई और तभी मैंने ठान लिया कि मुझे ऐसे बच्चों के लिए कुछ करना है। मैंने पत्रकारिता की पढ़ाई की और कई स्थानीय संस्थानों में काम भी किया। हालांकि तब तक मैं अपने स्तर पर बच्चों को शिक्षा दिलाने के लिए कुछ न कुछ कर रही थी। कुछ दिनों बाद मेरी शादी हो गई। हमारे घर से कुछ ही दूर एक खाली जमीन पर कुछ विस्थापित परिवारों ने डेरा डाला हुआ था। हर रोज सुबह मैं अपने बच्चे को स्कूल जाने के लिए तैयार करती, तो मेरी नजर कचरा बीनते, परिवार का पेट पालने के लिए करतब दिखाते गरीब बच्चों पर पड़ती, जिसे देखकर मैं परेशान हो जाती थी। इसके बाद मैंने उन बच्चों को पढ़ाने के लिए सहयोग देने के साथ जागरूक करना शुरू किया।

शुरुआत में यह काम अकेले संभाला। फिर कुछ साथियों के साथ मिलकर अनुनय एजुकेशन एवं वेलफेयर सोसाइटी बनाई। इसके तहत भोपाल और आस-पास के कई इलाकों में सेंटर खोले जहां गरीब, जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा दी जाती है। अलग-अलग उम्र के गरीब और बेसहारा बच्चे इन सेंटरों पर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बच्चों का स्कूल में दाखिला करवाने के अलावा जो बच्चे पहले से ही स्कूल जा रहे हैं लेकिन पढ़ाई में कमजोर हैं, उनके लिए ट्यूशन की व्यवस्था भी करवाती हूं। इसके अलावा, बच्चों को स्पोकन इंग्लिश की ट्रेनिंग दी जाती है साथ ही उनकी प्रतिभा निखारने के लिए डांस, सिंगिंग और पेंटिंग जैसी गतिविधियों में भी शामिल किया जाता है।

जो कहते थे कि ये भिखारी हैं, भिखारी ही रहेंगे, इन बच्चों ने उन सबको गलत साबित कर दिया।

शुरुआती दिनों में मुझे काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। गरीब-कचरा बीनने वाले बच्चों और उनके परिवार को शिक्षा के लिए तैयार करना आसान नहीं था। झुग्गी-बस्तियों में रहने वाले अधिकांश बच्चे ऐसे माहौल में पले-बढ़े होते हैं, जहां शिक्षा से ज्यादा तवज्जो कमाई को दी जाती है। इसलिए या तो वे खुद स्कूल जाना नहीं चाहते, या परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति उन्हें ऐसा करने नहीं देती। ऐसे में बच्चों के साथ-साथ उनके परिवारों को भी यह समझाना कि शिक्षा ही उनका भविष्य बदल सकती है, बहुत मुश्किल होता है। कई बार मुझे उनके बीच से होकर भी लौटना पड़ा, फंड जुटाने में भी समस्या हुई लेकिन मैंने हार नहीं मानी। बच्चों के लिए कुछ अपनी जेब से और कुछ दोस्तों की मदद से शुरुआती दौर में फंड जुटाया, लेकिन बच्चे बढ़ने के साथ-साथ खर्चे भी बढ़ने लगे, तो कुछ अन्य लोगों ने भी सहयोग किया। अभी हमारे सेंटर पर करीब 40 बच्चे पढ़ रहे हैं। साथ ही जो बच्चे स्कूल जा रहे उनकी भी देखरेख की जाती है ताकि वे दोबारा स्कूल जाना न बंद कर दें।

शुरुआत में पड़ोसी और पहचान वाले मुझसे कहा करते थे कि क्यों इन बच्चों पर अपना समय बर्बाद कर रही हो, ये नहीं बदलने वाले। भिखारी हैं और भिखारी ही रहेंगे, लेकिन आज इन बच्चों ने सबको गलत साबित कर दिखाया है। कुछ बच्चों के परीक्षा परिणाम हैरान कर देने वाले हैं, 5वीं तक की अपनी क्लास में 96 तो कोई 98 फीसदी अंक लेकर आया है। अब तक 500 से ज्यादा गरीब बच्चों को स्कूल की राह दिखा चुकी हूं। कई बार बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ दूसरी गतिविधियों में भी काफी अच्छा करते हैं, लेकिन उनकी प्रतिभा सामने नहीं आ पाती। हमारी कोशिश है कि हम उन्हें साक्षर बनाएं और उनकी छिपी प्रतिभा को दुनिया के समक्ष पेश करें।

कैसे मिटे गांव की प्यास

एक ही मंत्रालय में होने के कारण हाल ही में स्वच्छता अभियान का बजट बढ़ाया गया, पर ग्रामीण पेयजल का घटा दिया गया। जबकि सरकारों की अनदेखी और पर्यावरण की उपेक्षा के कारण ग्रामीण इलाके लगातार जल संकट का सामना कर रहे हैं।

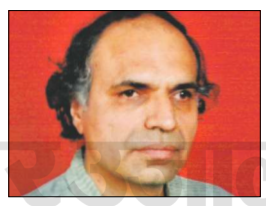

भारत डोगरा

दूरस्थ इलाके के गांवों में जब लोगों से उनकी प्राथमिकता पूछी जाती है, तब प्रायः वे साफ पेयजल की संतोषजनक व्यवस्था को ही अपनी सबसे बड़ी प्राथमिकता बताते हैं। उन गांवों की महिलाओं से बातचीत में तो यह प्राथमिकता और भी स्पष्ट रूप से उभरती है। इसके बावजूद राष्ट्रीय नीतियों और बजट-आवंटन में ग्रामीण पेयजल को वह महत्व नहीं मिल सका है जिसकी जरूरत है।

केंद्र सरकार में स्वच्छता और ग्रामीण पेयजल एक ही मंत्रालय के अंतर्गत आते हैं। हाल के कुछ वर्षों में जब स्वच्छता अभियान के बजट में तेजी आई, तब इस मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम के बजट में पहले तो कमी कर दी गई, और बाद में भी उपेक्षित वृद्धि नहीं की गई। यह ऐसे समय हुआ, जब ग्रामीण पेयजल का बजट तेजी से बढ़ाने की जरूरत थी।

अनेक ग्रामीण क्षेत्रों और वन-क्षेत्रों में पर्यावरण की बहुत तबाही हुई है। जंगल नष्ट किए गए हैं, पेड़ों को बहुत निर्ममता से काटा गया है और पर्यावरणीय नियमों की व्यापक अवेहलना कर खनन को बढ़ावा दिया गया। इस तबाही से वर्षा जल का धरती में संरक्षण बहुत कम हुआ है। अनेक जल-स्रोत सूख गए हैं, या उनमें पहले की अपेक्षा कम पानी उपलब्ध हैं। हिमालय देश की बहुत-सी नदियों का स्रोत है, पर वहां भी अनेक गांवों की प्यास बुझाने वाले झरने सूख गए हैं। यही स्थिति अनेक पर्वतीय और पठारी क्षेत्रों की भी है।

प्रायः गांवों में हैंडपंप लगाकर या पाइप लाइन बिछाकर मान लिया जाता है कि जलापूर्ति संतोषजनक हो गई, पर कुछ ही समय बाद देखा जाता है कि जल-स्तर नीचे जाने से हैंडपंप में और जल-स्रोत सूख जाने से पाइप लाइन में पानी नहीं आ रहा। जल-स्रोतों के सिमटते पानी को भी प्रायः औद्योगिक संयंत्रों और शहरों की ओर मोड़ दिया जाता है, जिससे गांवों का पेयजल संकट और विकट हो जाता है।

गांवों की आंतरिक विषमता भी चौंकाने वाली है। जल संकट विकट होने के बावजूद अनेक स्थानों पर बहुत अधिक जल का उपयोग करने वाली फसलें बढ़ती जा रही हैं।

बजट की कमी के बावजूद अनेक ऐसी पेयजल योजनाएं लाई जा रही हैं, जो महंगी हैं। यह भ्रष्टाचार के कारण हो रहा है। अनेक योजनाएं बिजली न मिलने या अन्य कारणों से ठप पड़ी हैं। दूसरी ओर, मंगल टरबाइन जैसी सस्ती और भारतीय स्थितियों में उपयुक्त तकनीकों की उपेक्षा हो रही है।

विभिन्न कारणों से ऐसे गांवों की संख्या बढ़ रही है, जिनका जल फ्लोराइड और आर्सेनिक की अधिकता से प्रभावित है। गुणवत्ता संबंधी अन्य समस्याएं भी हैं। फ्लोराइड और आर्सेनिक प्रभावित पेयजल पर एक उप-मिशन केंद्र सरकार ने कुछ समय पहले गठित किया था, पर इसकी प्रगति के विषय में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। जबकि आर्सेनिक व फ्लोराइड प्रभावित गांवों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

ग्रामीण पेयजल की समस्या बढ़ती जा रही है। सरकारी आंकड़े चाहे उपलब्धियों का कुछ भी दावा करें, पर वास्तविक स्थिति बहुत चिंताजनक है। इस कारण स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिक्षा, महिला कल्याण आदि विभिन्न क्षेत्रों की क्षति हो रही है। अब समय आ गया है कि ग्रामीण पेयजल उपलब्धता को पहले से कहीं अधिक महत्त्व दिया जाए। इसके लिए पहले से कहीं अधिक बजट की व्यवस्था होनी चाहिए तथा बजट का बेहतर उपयोग भी होना चाहिए। यह बहुत जरूरी है कि जिस पर्यावरण विनाश से जल-स्रोत सूख रहे हैं, उसे नियंत्रित किया जाए तथा जल संरक्षण-संग्रहण के कार्यों में सुधार करते हुए उन्हें बढ़ाया भी जाए।

खुली खिड़की

पर्सनल कंप्यूटर की हिस्सेदारी

कंप्यूटर हमारे कार्यस्थल के साथ व्यक्तिगत जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। कई तरह के क्रियाकलापों के लिए इसका उपयोग किया जा रहा है। पर्सनल कंप्यूटर को लेकर आई एक रिपोर्ट में बताया गया है कि वैश्विक बाजार के एक बड़े हिस्से पर एचपी कंपनी की भागीदारी है।

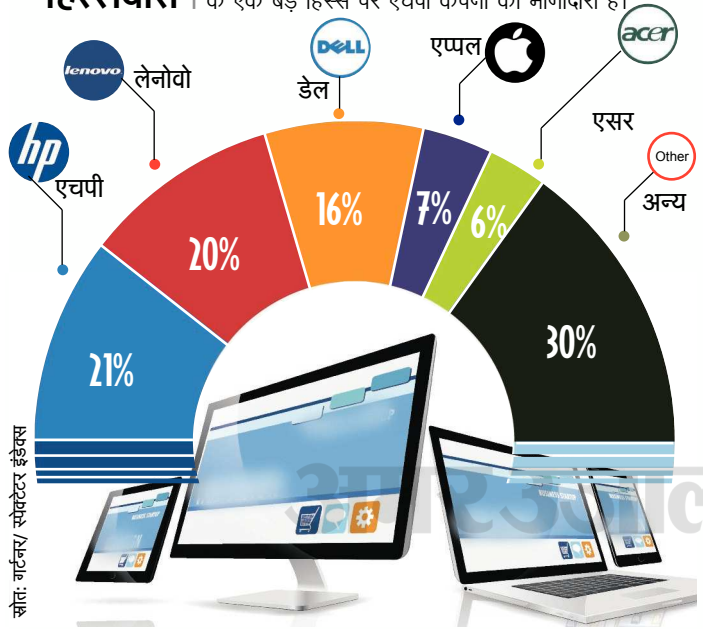

स्रोत: गार्टनर/ सेपरेटर इंडेक्स

ठाठ यहीं रह जाएगा

महर्षि व्यास के पुत्र शुकदेव ने किसी पहुंचे हुए शास्त्रज्ञ से ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। पिता ने उन्हें राजा जनक के पास भेज दिया। शुकदेव जी महाराज जनक के राजमहल पहुंचे। उन्हें लगा कि ऐश्वर्य से घिरे जनक क्या उपदेश देंगे। वह निराश होकर लौटने वाले थे कि जनक ने उन्हें बुलवाया और कहा, धर्म चर्चा हम महल में नहीं, पास स्थित सत्संग भवन में करेंगे। वहां पहुंचकर उन्होंने शुकदेव से आत्मा-परमात्मा संबंधी बातचीत शुरू कर दी। अचानक कुछ राजकर्मचारियों ने उन्हें सूचना दी कि महल के एक कक्ष में आग लग गई है। राजा जनक ने शांत भाव से कहा, मैं इस समय मुनि के साथ ईश्वर संबंधी बातचीत कर रहा हूं। देखते-देखते आग की लपटें सत्संग भवन तक पहुंच गईं। राजा जनक आग देखकर भी बेचैन नहीं हुए, किंतु शुकदेव अपनी पुस्तकें उठाकर कक्ष से बाहर निकल आए। उन्होंने देखा कि राजा जनक को कोई चिंता नहीं थी। वह निश्चिंत हो ईश्वर चिंतन में लगे रहे। कुछ देर बाद महाराज जनक ने शुकदेव जी से कहा, दुख का मूल संपत्ति नहीं, संपत्ति में आसक्ति है। संसार में हमें केवल वस्तुओं के उपयोग का अधिकार दिया गया है। अक्षय संपत्ति के स्वामी और निर्धन, दोनों को मृत्यु के समय सब कुछ यहीं छोड़कर जाना होता है। इसलिए नाशवान धन-संपत्ति के प्रति अधिक आसक्ति अधर्म है।

सत्संग

-संकलित

हरियाली और रास्ता

मुरली, बंसी और जीत की खुशी

दो भाइयों की कहानी, जिनकी सोच एक विचार ने बदल दी।

मुरली और बंसी सगे भाई थे, पर वे हमेशा लड़ते रहते थे। दिवाली से पहले मां ने उन्हें कहा, घर की सफाई करना तुम दोनों की जिम्मेदारी है। जो ज्यादा अच्छे से सफाई करेगा, उसे खास उपहार मिलेगा। यह कहकर मां ने घर को दो भागों में बांट दिया। शुरू में दोनों ने काफी मेहनत की। फिर बंसी को ख्याल आया, इनाम जीतने के दो ही तरीके हैं-या तो रगड़-रगड़ कर अपने हिस्से की सफाई करो या मुरली के हिस्से को ज्यादा गंदा कर दो। चूंकि सफाई करने में बहुत समय लगता, इसलिए वह मुरली के हिस्से में कचरा फैलाने लगा। मुरली को यह देखकर बहुत गुस्सा आया। दोनों में फिर लड़ाई छिड़ गई। मां के समझाने पर भी वे नहीं माने, तो मां उन्हें एक कहानी सुनाने लगी। कुछ साल पहले ओलंपिक प्रतियोगिता में निःशक्तजनों की दौड़ हो रही थी। रेफरी ने बंदूक चलाकर इशारा किया और सभी प्रतिभागी फिनिश लाइन की तरफ भागे। उसमें से एक का पैर कहीं फंसा और वह गिर पड़ा। वह दर्द से कराहने लगा। जो प्रतियोगी आगे निकल गए थे, वे उसकी आवाज सुन रुक गए। उनमें से एक लड़की, जिसका एक पैर एक हादसे में कट गया था, वापस मुड़ी और उस प्रतियोगी के पास जाकर अपना हाथ आगे बढ़ाकर बोली, चलो, हम साथ में दौड़ते हैं। यह देख बाकी सारे प्रतियोगी भी वापस आए और सबने एक दूसरे का हाथ पकड़ कर एक साथ चलकर फिनिश लाइन पार की। स्टेडियम में मौजूद लोगों ने खड़े होकर उन्हें सलामी दी। मां कहने लगी, जिंदगी में जीत ही सब कुछ नहीं होती। खुशी प्यार बांटने और एक दूसरे की मदद करने में ही मिलती है। कभी एक दूसरे को जिताकर देखो, तुम्हें समझ में आ जाएगा कि वह खुशी तुम्हारे खुद के जीतने से कितनी बड़ी होती है। मुरली और बंसी ने एक दूसरे की तरफ देखा, क्षमा मांगी और एक साथ घर की सफाई शुरू कर दी।

वह जीत किस काम की, जिसमें खुशी न मिले!